धर्मामृत सागार (फोल्डर नं. ००१०१७)

सम्पादन-अनुवाद – सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल
प्रधान सम्पादकीय
प्रस्तावना
विषयानुक्रमणिका
प्रथम अध्याय -- १-३९
मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा -- १
सागारका लक्षण --२
प्रकारान्तरसे साकारका लक्षण --३
सम्यक्त्व और मिथ्यात्वकी महिमा -- ५
मिथ्यात्वके भेद और उनका प्रभाव -- ६
सम्यग्दर्शनकी सामग्री -- ७
सच्चे उपदेष्टाओंकी दुर्लभता --८
भद्रका लक्षण -- ९
गृहस्थधर्मका पालक कौन-- १०
सम्पूर्ण सागारधर्म --२१
असंयमी सम्यग्दृष्टिका महत्त्व -- २४
गृहस्थको धर्म, यश और सुखका भी उपभोग करना चाहिए -- २५
सम्यक्त्वके अनन्तर देशसंयम धारण करनेकी प्रेरणा-- २९
प्रतिमाधारी श्रावकका अभिनन्दन --३१
ग्यारह प्रतिमा -- ३२
जिनपूजा और दानके भेद -- ३४
पक्ष, चर्या, साधनका स्वरूप -- ३७
श्रावकके तीन भेद -- ३९
द्वितीय अध्याय-- ४०-११९
गृहस्थधर्मपालनकी अनुज्ञा -- ४०
आठ मूलगुण-- ४१
स्वमत और परमतसे मूलगुण -- ४२
मद्यके दोष -- ४४
मांस भक्षणके दोष -- ४६
स्वयं मेरे प्राणीके मांसभक्षणमें दोष -- ४९
मांसभक्षणका संकल्प भी हानिकर -- ५१
मांस और अन्नमें अन्तर -- ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मधुके दोष -- ५३
मक्खनके दोष -- ५५
पाँच उदुम्बर फलोंके भक्षणमें दोष -- ५५
रात्रिभोजननिषेध --- ५६
पाँच पापोंके त्यागका अभ्यास भी आवश्यक -- ५९
जुआ आदि व्यसनोंका निषेध --- ५९
प्राकारान्तरसे आठ मूलगुण --- ६३
द्विज जिनधर्मके श्रवणका अधिकारी कब --- ६४
जैनकुलमें उत्पन्न भव्योंका महत्त्व -- ६५
जैनेतर कुलमें उत्पन्न भव्योंका महत्त्व -- ६५
जैनेतर कुलमें उत्पन्न भव्योंका कर्तव्य -- ६७
आठ दीक्षान्वय क्रियाओंका वर्णन -- ६७
शूद्र भी यथायोग्य धर्मका अधिकारी -- ७०
नित्यपूजाका स्वरूप --- ७२
अष्टाह्निक, इन्द्रध्वज और महापूजाका स्वरूप --- ७३
कल्पद्रुम पूजाका स्वरूप --- ७४
जलादिपूजाका फल -- ७४
जिनपूजाकी सम्यक् विधि तथा उसका फल --- ७६
जिनपूजामें विघ्नोंको दूर करनेका उपाय --- ७८
स्नान करके ही पूजा करनेका अधिकार --- ७८
चैत्य आदिके निर्माणका विशेष फल -- ८०
कलिकालकी निन्दा ---८१
कलिकालमें धर्मस्थितिका मूल जिनालय -- ८२
मुनियोंके लिए वसतिका -- ८३
स्वाध्यायशाला, बोजनशाला, औषधालयकी आवश्यकता ------------------------------------ ८३
जिनपूजकोंके सब कष्ट दूर --- ८४
जिनवाणीकी पूजाका विधान --- ८५
जिनवाणीके पूजक जिनपूजक ही हैं --- ८५
गुरु उपासनाकी विधि --- ८६
दान देनेका विधान तथा फल -- ८७
दानके अधिकारी--- ८८
समदत्तिका विधान --- ९०
जैनोंको दान देनेका महत्त्व -- ९०
नामादि निक्षेपसे चार प्रकारे जैनोंमें उत्तरोत्तर पात्रता -------------------------------------- ९०
भाव जैनको दान देनेका विशेष फल -- ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गृहस्थाचार्यको कन्यादि दान ---------- ९१
साधर्मीको कन्या देनेमें हेतु ---------- ९२
कन्यादानकी विधइ और फल ---------- ९२
विवाहके भेद ---------- ९४
विवाहविधि ---------- ९५
योग्यकन्याके दाताको महान् पुण्यबन्ध ---------- ९७
सत्कन्याका पाणिग्रहण आवश्यक ---------- ९८
साधर्मीको धन देनेका विधान ---------- १००
वर्तमान मुनियोंमें पूर्वमुनियोंकी स्थापना करके पूजनेका विधान ---------- १००
ज्ञान और तप पूजनीय ---------- १०२
पात्रदानका फल ---------- १०३
उत्तम, मध्यम, जघन्य पात्रका स्वरूप और उनको दान देनेका फल ---------- १०४
अपात्रदान व्यर्थ ---------- १०८
भोगभूमिमें उत्पन्न जीवोंकी जन्मसे लेकर सात सप्ताह तककी अवस्थाका वर्णन ---------- १०९
अन्नादि दानका फल ---------- ११०
मुनियोंको उत्पन्न करने और उन्हें गुणी बनानेंके प्रयत्न करनेकी प्रेरणा ---------- १११
दयादत्तिका विधान ----------११२
दिनमें भोजन करनेका विधान----------११३
व्रतका स्वरूप ---------- ११४
विचारपूर्वक् व्रत लेना आवश्यक ---------- ११४
संकल्पी हिंसाके त्यागका उपदेश ---------- ११५
हिंस्र आदि प्राणियोंके वधका निषेध ---------- ११६
तीर्थयात्रादि करनेका उपदेश ---------- ११७
यश कमानेपर जोर ----------११८
यश कमाने का उपाय ----------११८
तृतीय अध्याय ---------- १२०-१४४
नैष्ठिक श्रावकका स्वरूप ---------- १२०
छह लेश्याओंका स्वरूप ----------१२१
नैष्ठिकके ग्यारह भेद ---------- १२३
व्रतमें अतिचार लगानेवाला नैष्ठिक पाक्षिक होता है ---------- १२३
दर्शनिकका स्वरूप ---------- १२५
मद्य आदिके व्यापारका भी निषेध ---------- १२६
मद्यादिके सेवन करनेवालोंके साहचर्यका निषेध ---------- १२६
सब प्रकारके आचार आदिका निषेध ---------- १२७
चमड़ेके पात्रमें रखे घी-तेल आदिका निषेध---------- १२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुष्पोंके खानेका निषेध --- १२९
अजानाफल, बैगन, कचरिया आदि खानेका निषेध -- १२९
दिनके आदि तथा अन्तिम मुहूर्तमें भोजन करनेका निषेध ------------------------------------ १३०
जलगालन व्रतके अतिचार --१३१
सात व्यसनोंके उदाहरण ---१३१
व्यसन शब्दकी निरुक्ति -- १३३
द्यूतत्यागके अतिचार -- १३४
वेश्याव्यसन त्यागके अतिचार -- १३४
चौर्यव्यसन त्यागके अतिचार --- १३५
शिकार खेलनेके त्यागके अतिचार --- १३५
परस्त्रीव्यसन त्यागके दोष --- १३५
अनारम्भवध और उत्कट आरम्भका निषेध -- १३६
धर्मके विषयमें पत्नीको शिक्षित करनेका विधान --- १३७
स्त्रीको शिक्षा -- १३८
स्वस्त्रीमें अति आसक्तिका निषेध --- १३८
कुलस्त्रीमें ही पुत्र उत्पन्न करने का विधान --- १३९
बारह प्रकारके पुत्र -- १३९
कुलस्त्रीकी रक्षाका विधान -- १४०
वैद्यक लशास्त्रके अनुसार पुत्रोत्पादनकी विधि --- १४१
सत्पुत्रकी आवश्यकता --- १४३
चतुर्थ अध्याय--- १४५-२०३
व्रतिक प्रतिमाका स्वरूप --- १४५
निदानके भेद और उनका स्वरूप -- १४५
तीन शल्य -- १४६
शल्य सहचारी व्रतोंकी निन्दा --- १४७
श्रावकके उत्तर गुण --- १४७
सामान्यसे पाँच अणुव्रत --- १४८
हिंसा आदिको स्थूल कहनेका कारण --- १५२
अहिंसाणुव्रतका स्वरूप -- १५३
नव संकल्प -- १५४
घरमें रहनेवाले गृहस्थके अडिंसाणुव्रतका स्वरूप --- १५५
स्थावर जीवोंकी भी हिंसा न करनेका विधान -- १५५
संकल्पी हिंसाके त्यागका उपदेश -- १५६
हिंसा क्यों छोड़ना चाहिए --- १५६
अहिंसाणुव्रतका पालक कौन -- १५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहिंसाणुव्रतके अतिचार -- १५७
गाय-बैल आदिसे जीविका करनेका निषेध -- १५९
अतिचार लक्षण -- १६१
हिंस्य-हिंसक आदिका लक्षण --- १६२
अहिंसाव्रतको निर्मल रखने की विधि -- १६२
अहिंसाका पालन कठिन नहीं हैं -- १६४
रात्रिमें चारों प्रकारकें आहारका निषेध -- १६५
रात्रिभोजनमें दोष --- १६६
दृष्टान्त द्वारा रात्रिभोजन दोषकी महत्ता -- १६७
अन्यमतोंमें भी रात्रिमें पात्रदान आदिका निषेध -- १६८
रात-दिन खानेवाले पशुके तुल्य --- १६९
रात्रि भोजन न करनेवालोंका आधा जीवन उपवासपूर्वक ------------------------------------- १६९
भोजनके अन्तराय --- १७०
मौनव्रतकी प्रशंसा-- १७१
मौनव्रतका उद्यापन -- १७३
मौन कब रखना आवश्यक है -- १७४
सत्याणुव्रतका स्वरूप --- १७४
सत्य-सत्य वचनका स्वरूप -- १७७
असत्य-सत्य और सत्यासत्यका स्वरूप -- १७८
असत्य-असत्यका स्वरूप -- १७८
सत्याणुव्रतके अतिचार -- १८०
अचौर्याणुव्रतका लक्षण ---१८१
बिना दिये हुए तृणको भी ग्रहण करनेसे अचौर्य-व्रतभंग ----------------------------------- १८२
गड़े धनका स्वामी राजा -- १८३
सन्देहमें अपना धन लेनेसे भी व्रतभंग -- १८३
अचौर्याणुव्रतके अतिचार -- १८४
स्वदार सन्तोषाणुव्रत स्वीकारकी विधि -- १८६
स्वदार सन्तोषीका स्वरूप --- १८७
स्त्रीसम्भोग दुःखरूप -- १८९
परस्त्रीरमणमें सुखका अभाव -- १९०
स्वस्त्रीगमनमें भी हिंसा --- १९१
ब्रह्मचर्यकी महिमा --- १९१
ब्रह्माणुव्रतके अतिचार -- १९२
परिग्रहपरिमाण अणुव्रतका स्वरूप -- १९६
अन्तरंग परिषह -- १९७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहिरंग परिग्रहके त्यागकी विधि ---------- १९८
परिग्रहके दोष ---------- १९९
परिग्रहपरिमाण अणुव्रतके अतिचार ---------- १९९
पंचम अध्याय ---------- २०४-२५५
तीन गुणव्रत ---------- २०४
दिग्विरतिव्रतका स्वरूप ---------- २०५
दिग्व्रतसे अणुव्रती भी महाव्रतीके समान ---------- २०६
दिग्वरितके अतीचार ---------- २०७
अनर्थदण्डव्रकतका लक्षण ---------- २०८
पापोपदेशका स्वरूप ---------- २०९
हिंसोपकरणदानका स्वरूप ---------- २१०
दुश्रुति-अपध्यानका स्वरूप ---------- २१०
प्रमादचर्यका स्वरूप ----------२११
अनर्थदण्ड विरतिके अतिचार ---------- २१२
भोगोपभोग परिमाणव्रत ---------- २१४
भोग और उपभोगका लक्षण---------- २१४
भोगोपभोगपरिसंख्यानके पाँच भेद ---------- २१५
भोगोपभोगपरिमाणमें त्याज्य वस्तु ---------- २१७
अनन्तकाय और द्विदल त्याज्य ---------- २१८
भोगोपभोगपरिमाणके अतीचार ---------- २२०
भोगोपभोगपरिमाणमें त्याज्य खरकर्म ---------- २२२
शिक्षाव्रत ---------- २२६
देशावकाशिकव्रत ---------- २२७
देशावकाशिकव्रतके अतीचार ---------- २२९
सामायिकका स्वरूप ---------- २३०
सामायिकका समय ---------- २३२
सामायिकमें ध्येय ---------- २३३
सामायिककी सिद्धिके लिए पूजादि आवश्यक ---------- २३४
सामायिकके अतिचार ---------- २३५
पोषधव्रतका लक्षण ---------- २३६
मध्यम और जघन्य प्रोषध---------- २३७
प्रोषधकी विधि ---------- २३९
प्रोषधमें कर्तव्य---------- २४०
प्रोषधोपवासके अतिचार ---------- २४१
अतिथिसंविभागव्रतका लक्षण ---------- २४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिथि शब्दकी व्युत्पत्ति ---------- २४२
पात्रका स्वपरूप और भेद ---------- २४३
पात्रदानकी विधि ---------- २४४
देय द्रव्यका निर्णय ---------- २४५
दाताका लक्षण ---------- २४५
दानका फल ---------- २४७
दानके फलके दृष्टान्त ---------- २४९
अतिथिको खोजनेकी विधि ---------- २४९
भूमि आदिके दानका निषेध ---------- २५०
अतिथिसंविभाग व्रतके अतिचार ---------- २५२
षष्ठ अध्याय (श्रावककी दिनचर्या) ---------- २५६-२७८
प्रातःकालका कृत्य ---------- २५६
कृतिकर्मका विधान ---------- २५७
जिनालयको गमन ---------- २५८
जिनालयमें प्रवेश विधि ---------- २५९
पुण्यवर्धक स्तुतियाँ ---------- २६०
जिनालयमें कर्तव्य ---------- २६१
जिनालयमें वर्जित कार्य ---------- २६३
व्यापार तथा उससे निवृत्ति ---------- २६३
उद्यान भोजन आदिका निषेध ---------- २६५
मध्याह्नमें देवपूजाकी विधि ---------- २६५
तदनन्तर पात्रदान ---------- २६७
सायंकालीन कृत्य करके शयन ---------- २६९
रातमें नींद खुलनेपर चिन्तन ---------- २७०
मुनि बननेकी भावना ---------- २७६
सप्तम अध्याय ---------- २७९-३०८
सामायिक प्रतिमाका स्वरूप ---------- २७९
प्रोषधोपवास प्रतिमाका स्वरूप ---------- २८१
सचित्तविरत प्रतिमाका स्वरूप ---------- २८२
षष्ठ प्रतिमाका स्वरूप ---------- २८५
रात्रिभक्तव्रत प्रतिमाके स्वरूपमें भेद ---------- २८६
ब्रह्मचर्य प्रतिमाका स्वरूप ---------- २८६
ब्रह्मचारीके भेद ---------- २८७
वर्णाश्रम व्यवस्था ---------- २८८
आरम्भविरतका स्वरूप ---------- २९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिग्रहविरतका स्वरूप -- २९१
परिग्रह त्याग या सकलदत्तिकी विधि -- २९२
अनुमतिविरतका स्वरूप -- २९५
उसकी विधि --- २९६
गृहत्यागकी विधि -- २९६
विनय और आचारमें भेद -- २९८
उद्दिष्टविरतका स्वरूप --- २९९
उद्दिष्टविरतके भेद और विधि --- ३००
प्रथमकी भिक्षाकी विधि --- ३००
दूसरेका स्वरूप -- ३०३
श्रावकके लिए निषिद्ध कार्य -- ३०४
अष्टम अध्याय -- ३०९-३५४
साधक श्रावकका स्वरूप -- ३०९
शरीरके लिए धर्मका घात निषिद्ध--३११
सल्लेखना आत्मघात नहीं --- ३१२
मृत्यु सुनिश्चित होनेपर सल्लेखनाका विधान --- ३१३
उपसर्गसे मरण होनेपर तत्काल सल्लेखना धारण करे -- ३१३
यथाकाल मृत्युमें सल्लेखनाकी विधि -- ३१४
आहारत्यागका समय -- ३१५
संघमें जानेका विधान -- ३१५
मरते समय धर्माराधनाका फल -- ३१६
मुक्ति दूर होनेपर भी व्रतधारण आवश्यक -- ३१८
समाधि मरणके लिए शरीरको कृश करना आवश्यक --- ३१९
कषाय कृश किये बिना शरीर कृश करना व्यर्थ -- ३१९
समाधिमरणकी प्रशंसा --- ३२१
समाधिमरणके योग्य स्थान -- ३२२
सबसे क्षमा कराकर आचार्यसे अपने दोष निवेदन करे --- ३२३
पूरब या उत्तर को सिर करके लेटे --- ३२३
समाधिमरणके योग्य संस्तर --- ३२४
लिंगमें दोष होनेपर भी वस्त्रत्याग आवश्यक --- ३२४
आर्यिका भी अन्त समय वस्त्रत्याग करे -- ३२६
पाँच प्रकारकी शुद्धि --- ३२८
पाँच प्रकारका विवेक -- ३२८
समाधिमरणके अतिचार --- ३२९
संस्तरपर आरूढ़ होनेके पश्चात् निर्यापकाचार्यका कर्तव्य -- ३३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारत्यागकी विधि -- ३३१
आहारत्यागके पश्चात् स्निग्धपान -- ३३३
अन्तमें गर्मजल -- ३३३
उसके पश्चात् समस्त आहारका त्याग -- ३३५
रोगादिकी अवस्थामें जलमात्र अन्तमें उसका भी त्याग ------------------------------------ ३३६
समस्त संघ ध्यानमें लीन रहे -- ३३६
निर्यापकाचार्यका सम्बोधन -- ३३७
सम्यक्त्वका माहात्म्य --- ३३८
अर्हद्भक्तिका माहात्म्य -- ३३९
भावनमस्कारका माहात्म्य --- ३३९
ज्ञानोपयोगका माहात्म्य --- ३४०
पाँच महाव्रतकोंका महत्त्व -- ३४१
व्यवहाराराधनाके पश्चात् निश्चय आराधनाका विधान --------------------------------------- ३४५
निश्चय संन्यासका स्वरूप -- ३४६
परीषह या उपसर्ग आनेपर बोध -- ३४६
निश्चय रत्नत्रयका स्वरूप और उसके धारणाकी प्रेरणा ----------------------------------- ३५०
विधिपूर्वक समाधिमरणसे आठवें भवमें मोक्ष -- ३५२
श्लोकानुक्रमणी --- ३५५
पद्यानुक्रमणी --- ३६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org